



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 6, June 2024

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.423

 9940 572 462

 6381 907 438

 ijirset@gmail.com

 www.ijirset.com

प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक चेतना : एक अध्ययन

अमिता जैन

सह आचार्य, हिंदी साहित्य

राजकीय कन्या महाविद्यालय, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर

सारांश

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के ऐसे महत्वपूर्ण साहित्यकार हैं, जिन्होंने साहित्य को समाज और जनजीवन से गहराई से जोड़ा। उनके साहित्य में भारतीय समाज की वास्तविक स्थितियाँ, ग्रामीण जीवन, किसान-मजदूर वर्ग की समस्याएँ, गरीबी, शोषण, जातिगत भेदभाव, स्त्री की स्थिति और सामाजिक असमानता का स्पष्ट चित्रण मिलता है। प्रेमचंद ने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं माना, बल्कि समाज में जागरूकता उत्पन्न करने और मानवीय मूल्यों को मजबूत करने का माध्यम बनाया। प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों में आम आदमी का जीवन प्रमुख रूप से दिखाई देता है। उन्होंने किसान, मजदूर, दलित, स्त्री और गरीब वर्ग की पीड़ा को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। गोदान, निर्मला, सेवासदन, कफन, पूस की रात, सद्गति और ठाकुर का कुआँ जैसी रचनाएँ सामाजिक चेतना की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण हैं। इन रचनाओं के माध्यम से प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण, रूढ़िवादिता और मानवीय मूल्यों के पतन को उजागर किया। प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रेमचंद के साहित्य में निहित सामाजिक चेतना का अध्ययन किया गया है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज की समस्याओं को किस प्रकार अभिव्यक्त किया और पाठकों में सामाजिक संवेदना तथा सुधार की भावना को कैसे विकसित किया। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है और आज भी सामाजिक चेतना, न्याय, समानता और मानवीय संवेदना की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द : प्रेमचंद, हिंदी साहित्य, सामाजिक सरोकार, रूढ़िवादिता

भूमिका :

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें हिंदी कथा-साहित्य का युग-प्रवर्तक साहित्यकार माना जाता है, क्योंकि उन्होंने साहित्य को राजदरबार, कल्पना और मनोरंजन की सीमाओं से निकालकर समाज के वास्तविक जीवन से जोड़ा। प्रेमचंद के साहित्य में भारत के सामान्य मनुष्य का जीवन, उसकी समस्याएँ, संघर्ष, पीड़ा और आशाएँ अत्यंत प्रभावी रूप में दिखाई देती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानता, अन्याय, शोषण, गरीबी, जातिगत भेदभाव, स्त्री की दुर्दशा और किसान-मजदूर वर्ग की कठिनाइयों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया। प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक चेतना से ओत-प्रोत है। सामाजिक चेतना का अर्थ समाज की वास्तविक स्थितियों को समझना, सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक होना और समाज में सुधार की भावना उत्पन्न करना है। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में इसी चेतना को प्रमुख आधार बनाया। उनके पात्र समाज के किसी आदर्श या कल्पना-लोक से नहीं आते, बल्कि वे भारतीय समाज के सामान्य जनजीवन से जुड़े हुए पात्र हैं। किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, गरीब, निम्न मध्यवर्ग और शोषित वर्ग उनके साहित्य के केंद्र में दिखाई देते हैं। प्रेमचंद ने समाज की समस्याओं को केवल सतही रूप में नहीं दिखाया, बल्कि उनके पीछे छिपे आर्थिक, सामाजिक और नैतिक कारणों को भी उजागर किया। गोदान में किसान जीवन और शोषण की समस्या, निर्मला में दहेज प्रथा और स्त्री जीवन की त्रासदी, सेवासदन में नारी की सामाजिक स्थिति, सद्गति और ठाकुर का कुआँ में जातिगत भेदभाव, तथा पूस की रात और कफन में गरीबी और मानवीय विवशता का यथार्थ चित्रण मिलता है। इन रचनाओं से स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद साहित्य को समाज से अलग नहीं मानते थे, बल्कि साहित्य को समाज सुधार और मानवीय संवेदना का माध्यम समझते थे। प्रेमचंद की विशेषता यह है कि उन्होंने सामाजिक समस्याओं को केवल आलोचना के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि मनुष्य के भीतर छिपी संवेदना, नैतिकता और परिवर्तन की संभावना को भी रेखांकित किया। उनका साहित्य पाठक को समाज की वास्तविकताओं से परिचित कराता है और उसे अन्याय, शोषण तथा असमानता के प्रति सोचने के लिए प्रेरित करता है। इसी कारण प्रेमचंद का साहित्य अपने समय में भी महत्वपूर्ण था और आज भी सामाजिक दृष्टि से प्रासंगिक बना हुआ है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्न प्रकार है-

1. प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक चेतना के स्वरूप को समझना।
2. प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों में भारतीय समाज की वास्तविक स्थितियों का अध्ययन करना।
3. प्रेमचंद के साहित्य में किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और गरीब वर्ग की समस्याओं का विश्लेषण करना।
4. प्रेमचंद की रचनाओं में गरीबी, शोषण, जातिगत भेदभाव, दहेज प्रथा और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों को स्पष्ट करना।

विधि शास्त्र :

प्रस्तुत शोध-पत्र के लेखन में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इसके अंतर्गत प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों और उपन्यासों का अध्ययन किया गया है। विशेष रूप से गोदान, निर्मला, सेवासदन, कफन, पूस की रात, सद्गति और ठाकुर का कुआँ जैसी रचनाओं को आधार बनाकर सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही प्रेमचंद साहित्य से संबंधित आलोचनात्मक पुस्तकों, शोध-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं और उपलब्ध साहित्यिक सामग्री का भी उपयोग किया गया है। अध्ययन के दौरान प्रेमचंद की रचनाओं में वर्णित किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और गरीब वर्ग की समस्याओं को विषय के अनुसार वर्गीकृत करके उनका सरल और तार्किक विश्लेषण किया गया है। इसमें किसी क्षेत्रीय सर्वेक्षण या प्राथमिक आँकड़ों का उपयोग नहीं किया गया है। निष्कर्ष प्रेमचंद की रचनाओं और उपलब्ध आलोचनात्मक साहित्य के अध्ययन के आधार पर प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रकार यह शोध-पत्र पुस्तकालयीय अध्ययन, वर्णनात्मक विवेचन और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक चेतना का स्वरूप :

प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक चेतना अत्यंत व्यापक और प्रभावशाली रूप में दिखाई देती है। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन या कल्पना का साधन नहीं माना, बल्कि उसे समाज की वास्तविक स्थितियों को सामने लाने का माध्यम बनाया। प्रेमचंद की सामाजिक चेतना का केंद्र सामान्य मनुष्य है। उनके साहित्य में किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, गरीब और निम्न मध्यवर्गीय व्यक्ति की पीड़ा, संघर्ष और आशाएँ प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं। वे समाज में व्याप्त अन्याय,

शोषण, गरीबी, जातिगत भेदभाव और रूढ़िवादिता को गंभीरता से प्रस्तुत करते हैं। प्रेमचंद की दृष्टि सुधारवादी और मानवीय है। वे समाज की बुराइयों को दिखाते हैं, लेकिन साथ ही मनुष्य के भीतर छिपी नैतिकता, संवेदना और परिवर्तन की संभावना को भी महत्व देते हैं। उनकी कहानियाँ और उपन्यास पाठक को समाज के प्रति जागरूक बनाते हैं। गोदान में किसान जीवन की त्रासदी, निर्मला में दहेज प्रथा और स्त्री जीवन की पीड़ा, तथा सद्गति में जातिगत शोषण का चित्रण उनकी सामाजिक चेतना को स्पष्ट करता है। इस प्रकार प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक चेतना केवल विचार के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के यथार्थ अनुभव के रूप में व्यक्त होती है।

प्रेमचंद की रचनाओं में भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण :

प्रेमचंद की रचनाओं में भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण अत्यंत स्वाभाविक और प्रभावशाली रूप में मिलता है। उन्होंने अपने साहित्य में भारतीय समाज के ग्रामीण और शहरी दोनों रूपों को प्रस्तुत किया, लेकिन ग्रामीण जीवन उनके साहित्य का प्रमुख आधार रहा। गाँवों में रहने वाले किसान, मजदूर, स्त्रियाँ, गरीब परिवार, साहूकार, जमींदार और पुरोहित जैसे पात्र प्रेमचंद के साहित्य में बार-बार दिखाई देते हैं। वे समाज की चमकदार सतह नहीं, बल्कि उसके भीतर छिपी समस्याओं को सामने लाते हैं। गोदान में होरी के माध्यम से भारतीय किसान की आर्थिक विवशता, कर्ज, शोषण और सामाजिक दबाव का यथार्थ चित्रण मिलता है। पूस की रात में हल्कू की गरीबी और किसान जीवन की कठिन परिस्थितियाँ अत्यंत मार्मिक ढंग से सामने आती हैं। इसी प्रकार कफन में गरीबी, भूख और मानवीय संवेदनाओं के टूटने की स्थिति को दिखाया गया है। प्रेमचंद ने पारिवारिक संबंधों, सामाजिक परंपराओं, जातिगत व्यवस्था और आर्थिक विषमता को भी अपने साहित्य में स्थान दिया। उनका यथार्थ चित्रण केवल घटनाओं का वर्णन नहीं है, बल्कि भारतीय समाज की गहरी संरचनात्मक समस्याओं को समझने का प्रयास है। इसी कारण उनकी रचनाएँ आज भी भारतीय समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती हैं।

प्रेमचंद साहित्य में किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और गरीब वर्ग की समस्याएँ :

प्रेमचंद के साहित्य में किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और गरीब वर्ग की समस्याएँ अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत हुई हैं। उन्होंने समाज के उन वर्गों को साहित्य के केंद्र में रखा, जिन्हें लंबे समय तक उपेक्षित माना जाता था। किसान जीवन की कठिनाइयाँ प्रेमचंद के साहित्य का प्रमुख विषय हैं। गोदान का होरी कर्ज, गरीबी, सामाजिक प्रतिष्ठा और जमींदारी-

साहूकारी शोषण के बीच पिसता हुआ किसान है। मजदूर और गरीब वर्ग की विवशता कफन और पूस की रात जैसी कहानियों में स्पष्ट दिखाई देती है। स्त्री जीवन की समस्याओं को प्रेमचंद ने बहुत गंभीरता से समझा। निर्मला में दहेज प्रथा, अनमेल विवाह और स्त्री की मानसिक पीड़ा का मार्मिक चित्रण है। सेवासदन में नारी की सामाजिक स्थिति और उसके सम्मान का प्रश्न उठाया गया है। दलित जीवन की पीड़ा सद्गति और ठाकुर का कुआँ में विशेष रूप से दिखाई देती है। इन रचनाओं में जातिगत अपमान, छुआछूत और सामाजिक भेदभाव का यथार्थ चित्रण मिलता है। प्रेमचंद इन वर्गों की समस्याओं को केवल दुख के रूप में नहीं दिखाते, बल्कि समाज की अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर प्रश्न भी उठाते हैं। इस प्रकार उनका साहित्य वंचित और शोषित वर्गों की आवाज बनकर सामने आता है।

प्रेमचंद की रचनाओं में सामाजिक कुरीतियाँ और असमानता :

प्रेमचंद की रचनाओं में सामाजिक कुरीतियों और असमानता का गंभीर चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में फैली बुराइयों को उजागर किया और उनके दुष्परिणामों को पाठकों के सामने रखा। दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, जातिगत भेदभाव, छुआछूत, जमींदारी शोषण, साहूकारी व्यवस्था, गरीबी, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता जैसी समस्याएँ प्रेमचंद के साहित्य में बार-बार दिखाई देती हैं। निर्मला में दहेज प्रथा के कारण एक युवती का जीवन दुख और संदेह से भर जाता है। सद्गति में जातिगत भेदभाव और ब्राह्मणवादी शोषण की कठोरता सामने आती है। ठाकुर का कुआँ में छुआछूत और पानी जैसे मूल अधिकार से वंचित दलित जीवन का चित्रण है। गोदान में किसान शोषण, सामाजिक दबाव और आर्थिक असमानता का विस्तृत चित्रण मिलता है। प्रेमचंद ने यह दिखाया कि सामाजिक कुरीतियाँ केवल व्यक्ति को नहीं, बल्कि पूरे समाज को कमजोर करती हैं। उनकी रचनाएँ इन बुराइयों के विरुद्ध संवेदना और जागरूकता पैदा करती हैं। प्रेमचंद का उद्देश्य समाज को केवल दोष देना नहीं था, बल्कि उसे सुधार की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करना था। इसलिए उनकी रचनाएँ सामाजिक असमानता के विरुद्ध मानवीय और सुधारवादी दृष्टि प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक चेतना अत्यंत व्यापक, प्रभावशाली और जनजीवन से जुड़ी हुई है। प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य को केवल कल्पना, मनोरंजन और भावुकता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज की वास्तविक समस्याओं से जोड़ा। उनके साहित्य में भारतीय समाज की गरीबी, शोषण, जातिगत भेदभाव, स्त्री की पीड़ा, किसान-मजदूर वर्ग की विवशता और सामाजिक असमानता का सजीव चित्रण मिलता है। इसी कारण प्रेमचंद को हिंदी कथा-साहित्य का यथार्थवादी और जनपक्षीय रचनाकार माना जाता है। प्रेमचंद की रचनाओं में सामाजिक चेतना का मुख्य आधार सामान्य मनुष्य है। उन्होंने किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और गरीब वर्ग के जीवन को अपनी कहानियों और उपन्यासों का केंद्र बनाया। गोदान में किसान जीवन की त्रासदी, निर्मला में दहेज प्रथा और स्त्री जीवन की पीड़ा, सद्गति और ठाकुर का कुआँ में जातिगत भेदभाव तथा पूस की रात और कफन में गरीबी और मानवीय विवशता का मार्मिक चित्रण उनकी सामाजिक दृष्टि को स्पष्ट करता है। इन रचनाओं के माध्यम से प्रेमचंद ने समाज की उन स्थितियों को सामने रखा, जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता था।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद ने सामाजिक समस्याओं को केवल वर्णित नहीं किया, बल्कि उनके मूल कारणों की ओर भी संकेत किया। उनके साहित्य में साहूकारी व्यवस्था, जमींदारी शोषण, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, दहेज प्रथा, छुआछूत और सामाजिक असमानता जैसी बुराइयों की आलोचना मिलती है। प्रेमचंद की दृष्टि सुधारवादी और मानवीय है। वे समाज की कमियों को सामने लाकर पाठकों में संवेदना, जागरूकता और परिवर्तन की भावना उत्पन्न करते हैं। प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज का सच्चा दर्पण है। उनकी रचनाएँ यह बताती हैं कि साहित्य का उद्देश्य केवल सौंदर्य या मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करना भी है। उन्होंने वंचित और शोषित वर्गों की आवाज को साहित्य में स्थान देकर हिंदी साहित्य को अधिक सामाजिक, मानवीय और उत्तरदायी बनाया। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक चेतना हिंदी साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। उनका साहित्य आज भी सामाजिक न्याय, समानता, मानवीय संवेदना और सुधारवादी विचारों की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है। प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी और पाठकों को

अन्याय तथा शोषण के विरुद्ध सोचने की प्रेरणा प्रदान की। यही उनकी साहित्यिक महानता और सामाजिक उपयोगिता का मूल आधार है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. प्रेमचंद. (2018). गोदान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. प्रेमचंद. (2017). निर्मला. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. प्रेमचंद. (2016). सेवासदन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. प्रेमचंद. (2019). प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियाँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. राय, अमृत. (2005). प्रेमचंद: कलम का सिपाही. नई दिल्ली: हंस प्रकाशन।
6. गुप्त, कमलकिशोर. (2012). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
7. शर्मा, रामविलास. (2002). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. बच्चन सिंह. (2004). हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
9. शुक्ल, रामचंद्र. (2007). हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
10. सिंह, नामवर. (2010). आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
11. पांडेय, मैनेजर. (2011). साहित्य और समाज. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
12. नवल, नंदकिशोर. (2008). प्रेमचंद का साहित्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 9940 572 462  6381 907 438  ijirset@gmail.com



www.ijirset.com

Scan to save the contact details